# लैंगिक असमानता से समानता तक की ओर | 'सद्भावना विद्यालय'

दीप्ति सिंह राठौर

लैंगिक असमानता का अर्थ है समाज में महिलाओं और पुरुषों के बीच व्याप्त असमानताएँ। यह विभाजन प्राचीन समय से चला आ रहा है और अभी 21वीं सदी में भी सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, वैज्ञानिक, मनोरंजन और खेल जैसे क्षेत्रों में मौजूद है। महिलाओं के ख़िलाफ़ भेदभाव जेंडर के आधार पर किए जाने वाले कामों और व्यवहारों का एक महत्त्वपूर्ण परिणाम है। इस वजह से आज भी कन्या भ्रूण हत्या के मामले सामने आते रहते हैं। कई कारणों से आज भी सैकड़ों लड़कियों को स्कूल जाने की इज़ाज़त नहीं मिलती। हालाँकि पिछले कई सालों में बहुत कुछ बदल गया है और महिलाएँ कई अलग-अलग पेशों में योगदान दे रही हैं, लेकिन समाज का काफ़ी बड़ा हिस्सा अभी भी इस असन्तुलन से प्रभावित है। नतीजतन, समाज में अब भी हमारे रोज़मर्रा के व्यवहारों में लैंगिक असमानता मौजूद है, लेकिन यह हमें परेशान नहीं करती है। इन व्यवहारों को जल्द-से-जल्द बदलना चाहिए; तभी हम संवैधानिक रूप से दिए गए मौलिक अधिकारों के वास्तविक महत्त्व को देख पाएँगे और सच्ची समानता की ओर बढ़ पाएँगे।

लैंगिक असमानता कई छोटे-छोटे कार्यों और व्यवहारों का परिणाम है। कई स्कूल दावा करते हैं कि वे सभी विद्यार्थियों के साथ समान व्यवहार करते हैं और लैंगिक भेदभाव नहीं करते हैं। लेकिन अपने 12 साल के शिक्षण करियर के दौरान, मैंने स्कूली स्तर पर मौजूद लैंगिक असमानताओं को देखा और अनुभव किया है।

एक दिन, मुझे एक विद्यार्थी का फ़ोन आया। वह चाहती थी कि मैं उसे हिन्दी के कुछ सवाल समझाऊँ। कॉल के बीच में, उसने कहा कि उसे फ़ोन रखना होगा क्योंकि उसका भाई काम से लौट आया है और उसे भाई को खाना देना होगा। इससे मेरे मन में सवाल उठा कि क्या आधुनिक समाज में भी लड़कियों को सिर्फ़ घरेलू कामों के लिए ही उपयुक्त माना जाता है। अगर घर में बहन है और भाई बाहर से आए तो माँ की ग़ैर-मौजूदगी में बहन को ही भोजन परोसना चाहिए? और केवल माँएँ और बहनें ही भोजन क्यों परोसें? बचपन से ही लड़कों और लड़कियों को घर के अलग-अलग काम सौंपे जाते हैं।

हमारी भाषा, चित्रों और कहानियों में भी घरेलू कामों को जेंडर के आधार पर बाँटा गया होता है। इस अन्तर को बढ़ावा देने में स्कूल भी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। यह दृढ़ विश्वास कि घर का काम लड़कियों और महिलाओं की ज़िम्मेदारी है और घर के बाहर के काम की ज़िम्मेदारी लड़कों और पुरुषों की है, तभी बदलना शुरू होगा जब हम गहन चर्चाएँ करेंगे और स्कूल के कामों में लड़कों और लड़कियों दोनों की भागीदारी सुनिश्चित करेंगे।

जब कक्षा में लड़कों और लड़कियों से उनके सपनों के बारे में पूछा जाता है, तो लड़के बड़े होकर सेना या पुलिस बल में भर्ती होने या डॉक्टर बनने की इच्छा व्यक्त करते हैं। जबकि, अधिकांश लड़कियाँ शिक्षण के करियर को चुनती हैं या सवाल करती हैं कि उन्हें अपनी पढ़ाई क्यों जारी रखनी चाहिए जबकि आगे चलकर उन्हें सिर्फ़ घरेलू काम ही करने हैं।

जब भी मैं अपने विद्यार्थियों से उनके पेशों के बारे में पूछती हूँ, तो ज़्यादातर लड़कियाँ इसी तरह के जवाब देती हैं। यह हमें सोचने पर मजबूर करता है कि भले ही आज महिलाएँ पुरुषों के साथ काम करने के लिए बाहर जाती हैं, पर सामाजिक तौर-तरीक़ों के कारण कुछ ही पेशे महिलाओं के लिए उपयुक्त माने जाते हैं, जिनमें से एक शिक्षण का पेशा है। मैं ख़ुद एक शिक्षक हूँ। परिवार में या दूसरों से बातचीत के दौरान जब भी मैं ज़िक्र करती हूँ कि मैं एक शिक्षक हूँ, तो सभी मेरी प्रशंसा करते हुए कहते हैं कि महिलाओं के लिए पढ़ाना सबसे अच्छा काम है क्योंकि इस काम में समय निश्चित होने की वजह से वे नौकरी के साथ-साथ अपने परिवारों को भी समय दे पाती हैं। समाज ने पहले ही तय कर लिया है कि महिलाओं को किस तरह के काम करना चाहिए, यही वजह है कि लड़कियाँ इन पेशों से आगे नहीं सोच पाती हैं।

यहाँ स्कूलों में लैंगिक भेदभाव को बढ़ावा देने वाले व्यवहारों के कुछ उदाहरण दिए गए हैं :

- लैंगिक असमानता को बढ़ावा देने वाली भाषा का इस्तेमाल करना। जैसे कोई लड़का रोता है, तो उसे यह कहकर चुप करा दिया जाता है कि "लड़की की तरह क्यों रो रहे हो?" ऐसे कई लड़के होते हैं, जो स्वभाव से शर्मीले होते हैं और उन्हें सौंपे गए कुछ कामों को करने में कठिनाई

होती है। उनका भी यह कहकर मज़ाक उड़ाया जाता है कि "लड़कियों की तरह क्यों शरमा रहे हो?"

- प्राथमिक विद्यालय (प्राइमरी स्कूल) से ही कक्षा में लड़के और लड़कियों के बैठने की अलग-अलग व्यवस्था की जाती है। कम उम्र में व्यवहार में अन्तर बहुत अधिक दिखाई नहीं देता है, लेकिन जब तक वे उच्च प्राथमिक कक्षाओं (अपर प्राइमरी) तक पहुँचते हैं, ऐसा अन्तर स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है।
- सुबह की सभा में भी लड़कों और लड़कियों के लिए अलग-अलग लाइनें होती हैं।
- लाइनों में खड़े किए जाने पर लड़कियाँ हमेशा आगे और लड़के उनके पीछे खड़े होते हैं।
- पारम्परिक रूप से, लड़कियाँ सुबह की सभा का नेतृत्व करती हैं।
- लड़कियों के लिए कला, गायन, रंगोली और सजावट जैसी गतिविधियाँ होती हैं, जबकि भाषण, वाद-विवाद और कविता पाठ के लिए लड़कों को प्राथमिकता दी जाती है।
- सांस्कृतिक कार्यक्रमों में लड़कियों की अधिक भागीदारी होती है।
- लड़के दौड़, क्रिकेट और फुटबॉल जैसे खेलों में भाग लेते हैं, जबकि लड़कियों के लिए कैरम, लूडो, खो-खो, कबड्डी और बैडमिंटन जैसे खेलों का आयोजन किया जाता है।
- कक्षा और ब्लैकबोर्ड की सफ़ाई और लड़कियों को शान्त रखने जैसे काम लड़कियों को सौंपे जाते हैं, जबकि लड़कों को पूरी कक्षा को शान्त रखने, पानी की बाल्टी उठाने, टेबल-बेन्च को इधर-उधर खिसकाने या हटाने आदि की ज़िम्मेदारी सौंपी जाती है।

जब मैंने शासकीय माध्यमिक विद्यालय, बनारी में आना शुरू किया, तो मुझे ऐसी बहुत-सी बातें पता चलीं, जो जाने-अनजाने लैंगिक असमानता को बढ़ावा देने में योगदान दे रही हैं। थोड़े से सोच-विचार के साथ स्कूल में लैंगिक असमानता को दूर करने की कोशिशें की जा सकती हैं। मैं एक शिक्षक हूँ इसलिए यह मेरा कर्तव्य है कि शिक्षण को लेकर मेरा तरीक़ा ऐसा हो कि मैं असमानता की इस खाई को पाटने में अपनी भूमिका निभा सकूँ।

- हमने, पूरे स्टाफ़ के साथ मिलकर, इस रूढ़िवादिता को दूर करने के लिए कुछ छोटी कोशिशें की हैं, कि कुछ खेल सिर्फ़ लड़कियों के लिए होते हैं या कुछ सिर्फ़ लड़कों के लिए। हमने लड़कियों को लड़कों के साथ क्रिकेट और फुटबॉल खेलने का मौक़ा दिया।
- मध्यान्ह भोजन में एक साथ बैठकर खाने की व्यवस्था की गई और लड़कों को भी भोजन परोसने के काम में शामिल किया गया।
- हमने स्कूल के पीछे ख़ाली जगह में एक बग़ीचा लगाने का फ़ैसला किया। वह जगह बहुत गन्दी थी - खरपतवार और कचरे से भरी हुई। तो सभी शिक्षकों और बच्चों ने मिलकर इसकी सफ़ाई की। सफ़ाई के इस काम में महिला और पुरुष शिक्षकों ने बराबर ज़िम्मेदारी ली। बच्चे भी इससे प्रेरित हुए और लड़के और लड़कियों दोनों ने बराबरी से सक्रिय रूप से इसमें भाग लिया।
- मैंने देखा कि सांस्कृतिक कार्यक्रमों में सिर्फ़ लड़कियाँ ही डांस में भाग लेती थीं। मैंने लड़कों को भी डांस में शामिल करने की कोशिश शुरू की। मुझे पता चला कि वे डांस करने में शर्माते थे क्योंकि उन्हें कभी भी डांस में भाग लेने के लिए नहीं कहा गया था। मैंने बच्चों से बात की और उन्हें समझाया कि वे डांस को सिर्फ़ एक कला के रूप में देखें और सबको अपना हुनर दिखाएँ। इसके बाद, लड़कों ने भी डांस कार्यक्रमों में भाग लेना शुरू कर दिया। कुछ लड़कों ने मुझसे कहा कि अगर मैं उनके स्कूल नहीं आई होती तो उन्हें कभी डांस में हिस्सा लेने का मौक़ा ही नहीं मिलता।
- कक्षा में भी, मैंने लैंगिक असमानता को दूर करने के लिए कुछ फेरबदल किए हैं :
  - लड़कों और लड़कियों के लिए कक्षा में बैठने की लोकतांत्रिक व्यवस्था।
  - सहपाठियों के साथ (peer-to-peer) व समूह में सीखने (group learning) के दौरान, गतिविधियों के लिए लड़कों और लड़कियों के जोड़े या समूह बनाना।
  - भाषा पढ़ाते समय रोल-प्ले आदि में लड़के और लड़कियों, दोनों को शामिल करना।
  - लड़के और लड़कियों, दोनों को कक्षा की सफ़ाई की ज़िम्मेदारी देना।
  - विज्ञान के मॉडल बनाने में लड़कियों को शामिल करना।
  - यह सुनिश्चित करना कि स्कूल सभा के कार्यक्रमों में लड़के और लड़कियाँ दोनों समान रूप से भाग लें।

- उनके साथ इस बारे में बात करना कि लड़की और लड़का होने का क्या मतलब है; कामों के सन्दर्भ में उनके विचारों को बाँटना और मेरे नज़रिए को साझा करना; लड़कों से घर के कामों में अपनी माँओं की मदद करने के लिए कहना।

---

**दीप्ति सिंह राठौर** शासकीय माध्यमिक विद्यालय, बनारी (ज़िला जांजगीर, छत्तीसगढ़) में पढ़ाती हैं। कला में स्नातक होने के साथ ही उन्होंने बीएड की डिग्री भी हासिल की है। उनके पास क़ानून की डिग्री भी है। पढ़ाना उनका जुनून है। विद्यार्थियों के साथ बातचीत करना व उन्हें समझना और पढ़ाना उनका शौक़ बन गया है। इसके अलावा, उन्हें गाना, डांस करना और पेंटिंग करना पसन्द है। उनसे *dipti.rathore87@gmail.com* पर सम्पर्क किया जा सकता है।

**अनुवाद :** सीमा **पुनरीक्षण :** भरत त्रिपाठी **कॉपी एडिटर :** अनुज उपाध्याय